आज की अव्यक्त मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:14-12-14

हम भाग्यशाली आत्माओं को सर्व खजानों से भरपूर कर, हर कर्म में अपना साथ निभाने वाले, हम बच्चों को सदा माया के भय से निर्भय बनाने वाले, हमें तृप्त आत्मा बनाने वाले, रहमदिल - बेहद के बाप-दादा ने कहा, मीठे बच्चे - बाप-दादा द्वारा मिले खुशी के खजानों के भंड़ार को हर कर्म में प्रैक्टिकल में लाओ अर्थात सदा स्मृति को स्वरूप में लाओ (यानी स्मृति स्वरूप बनो).

बाप-दादा आज भी अपनी अव्यक्त मुरलीओ में हम बच्चों से यही प्रश्न पुछते है - सदा खुश हो? सदा-खुश! क्योंकि अगर कोई भी बात में हमारी खुशी जाती है तो हमें उस समय बाप की स्मृति नहीं है. सदा खुश रहने की चाबी एक ही है - हर कर्म में बाप के साथ सर्व सम्बन्धों से साथ निभाते हुए एक बाप की स्मृति में रहो. इसके लिए बाप-दादा ने आज की मुरली में कहा एक वाक्य ही याद रहे तो हमें सदा बाप की स्मृति रह सकती है. बाप-दादा ने कहा, सर्व आत्माये भिखारी बन जिस बाप की एक सेकण्ड की झलक देखने की इच्छा से कितने कठिन मार्ग अपनाते हैं और आप श्रेष्ठ आत्माये सर्व सम्बन्धों से मिलन मनाने के अनुभवों के श्रेष्ठ खजानों के अधिकारी हो. दुनिया जिसके सामने भिखारी है और आप उसके बच्चे हो, इससे बड़ी खुशी और कोई हो सकती है क्या?

बाप-दादा द्वारा प्राप्त खुशी के खजानों को प्रैक्टिकल रुप में लाने की विधि -

- अमृतवेले से लेकर इस खुशी के खजानों को यूज करो, सोचो वा अपने आप से बातें करो. आँख खुलते ही पहले-पहले संकल्प में किससे मिलन होता है, कौन सामने आता है? विश्व के रचता, सर्व खजानों के दाता, सर्व वरदानों के दाता बिज से मिलन होता है, जिसमें सारा वृक्ष समाया हुआ है. तो सबसे पहली खुशी की बात है अमृतवेले सर्व सम्बन्ध से बाप से मिलन मनाना. तो अमृतवेले इस खुशी के खजाने को यूज करो.

- दूसरा खुशी का खजाना है हम ईश्वरीय पढ़ाई प्राप्त करने के पात्र आत्माये है. बाप-दादा कहते है आप इतनी सिकीलधे श्रेष्ठ आत्माये हो जो स्वयं भगवान आपको पढ़ाने के लिए परमधाम से आते हैं. इस लोक से भी पार जहाँ तक साईन्स वाले स्वप्न में भी पहुँच नहीं

सकते ऐसे परमधाम से स्पेशल आपको पढ़ाने के लिए आते हैं. और पढ़ाने की फी नहीं लेते. और ही पढ़ाई की प्रालब्ध स्वर्ग का स्वराज्य स्वयं नहीं लेते, आपको देते हैं. तो इससे बड़ी खुशी और क्या होती है? इस स्मृति से खजाने को यूज करो.

- तीसरा खुशी का खजाना है कर्मयोगी जीवन. कर्मयोगी अर्थात बाप के साथ रहते हुए हर कार्य करने वाला. सदा यह स्मृति में रहे की कोई भी कर्म कर रहे हो, लौकिक वा अलौकिक लेकिन आलमाइटी अथॉरिटी आपका साथी अर्थात फैन्ड बनकर हर समय आपके साथ है. कभी वह तुम्हारा फैन्ड है और कभी कम्बाईन युगल के रुप में हैं. ऐसा कम्बाइन्ड़ स्वरूप विचित्र युगल रुप जो सदा आपको कहते है - सारा बोझ हमें दे दो और तुम हलके रहो. जहाँ कोई भी मुश्किल कार्य आये तो मुश्किल कार्य बाप को अर्पण कर दो तो मुश्किल कार्य सहज हो जायेगा. ऐसे कर्मयोग के पार्ट में सदा साथी पन के खजाने को यूज करो और खुशी रहो.

- चौथा खुशी का खजाना है बाप के साथ अलौकिक मनोरंजन का आनंद लो. बाप-दादा कहते है अगर आपको सैर करने की रुचि है वा देखने की रुचि है, पढ़ने की रुचि है, श्रृंगार की रुचि है, डान्स की रुचि है, रुह-रुहाण करने की रुचि है और जो भी रुचि हो वह सब अलौकिक मनोरंजन के साधन आप के साथ हैं. देखने चाहते हो तो बाप के साथ स्वर्ग को देखो - संगमयुग की श्रेष्ठता को देखो. अपने और बाप के कर्तव्य की अलौकिक कहानी का ड्रामा देखो. सैर करना चाहते हो तो बाप के साथ तीन लोकों का सैर करो. श्रृंगार करना चाहते हो तो हर दैवी गुण के विस्तार से स्वयं को सजा लो. ड्रामा देखना चाहते हो तो पांच हजार वर्ष का ड्रामा देखो. हिस्ट्री पढ़ने चाहते हो तो अपने ८४ जन्मो की हिस्ट्री पढ़ो. रुह-रुहाण करना चाहते हो तो रुह बन रूहों के रचता से रुह-रुहाण करो. इन सब साधनों से सदा अपने को खुश रखो.

- पाँचवाँ खुशी का खजाना है - भगवान को भोग लगाकर भगवान के साथ भोजन करने की खुशी का खजाना. बाप-दादा कहते है भोजन बनाते समय सबसे पहले प्यारे-प्यारे बाप को स्वीकार कराना है. इस स्मृति से भोजन बनाओ कि स्वयं भगवान को खिलाना है. तो यह याद रखो कि इस संगम पर ही सदा बाप आपके साथ भोजन खाते हैं. बच्चों के साथ बाप का

वायदा है - सदा साथ रहेंगे. तुम्हीं से खायें, तुम्हीं से बैठें, तो इससे बड़ी खुशी और क्या चाहिए.

- छठा खुशी का खजाना है - रात के समय बाप-दादा (स्वयं भगवान) की गोद में जाकर सोना. बाप-दादा कहते है सोने से पहले सारे दिन के समाचार की लेन-देन बाप-दादा से करो. एक दिन का समाचार दो और दूसरे दिन का श्रेष्ठ संकल्प और कर्म की प्रेरणा लो. बाप से सब समाचार की लेन-देन करना अर्थात हल्के बन जाना. ऐसे तैयार होकर बाप-दादा की गोदी में सो जाओ, अकेले नहीं सोओ. तो ऐसे सदा साथ के खुशी के खज़ाने को सारी रात के लिए यूज करो.

सदा खुशी के खज़ाने को यूज करने की चाबी है - सदा एक की स्मृति में रहो.

ॐ शांति.